ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 28 बुलेटिन अवधिः 7 – 11 अप्रैल, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 06 अप्रैल, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	07–04–2018	08–04–2018	09–04–2018	10–04–2018	11–04–2018
वर्षा (मिमी0)	2	5	25	10	20
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	21	19	18	17
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	12	11	10	9
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	85	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	45	50	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	010	010	006	006
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व

आगामी 7 व 8 अप्रैल को बूंदा बांदी होने तथा 9 से 11 अप्रैल को मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (30 मार्च से 5 अप्रैल 2018 सुबह 8:30 तक) में अधिकतम तापमान 19.8 से 22.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.0 से 10.5 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- लोबिया की फसलों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में, मार्च–अप्रैल में सॉवा (मादिरा/झंगुरा) की प्रजातियों जैसे वी0एल0 मादिरा–172, वी0एल0 मादिरा–207 तथा पी0आर0जे01 की बुवाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25से0मी0 एवं पौधे से पौधे की दूरी 10से0मी0 पर करें। जिसमें 8–10कि0ग्रा0/है0 बीज उपयुक्त होगा। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का 40:20:20 के अनुपात में प्रयोग करें। जिसमें नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा का बुवाई के साथ प्रयोग करें। नत्रजन की शेष बची आधी मात्रा बुवाई के एक महीने बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें।
- झंगुरे की बुवाई के समय सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट उपलब्ध हो तो 100 क्विंटल/है0 या 2 क्विंटल प्रति नाली की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें। यदि कम्पोस्ट उपलब्ध न हो तो वर्मीकम्पोस्ट 50 क्विंटल/है0 या 1 क्विंटल प्रति नाली की दर से प्रयोग करें।
- खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के 20–25 दिन बाद 650ग्राम 2,4 डी0 सोडियम साल्ट 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सावा के बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज की दर से बुवाई से पूर्व उपचारित करें।

उद्यानप्रबन्धः

- प्रथम पखवाड़े तक मिर्च, शिमलामिर्च तथा बैंगन की रोपाई करें।
- मिर्च व टमाटर की फसल मे विषाणु जनित रोगो के नियत्रंण हेतु संक्रमित पौधो को निकालकर नष्ट कर दें।
- टमाटर व मिर्च की फसल मे सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें। पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
- फ्रासबीन में तनो पर सफेद रूई जैसी बढ़वार दिखाई देने पर ग्रसित हिस्से/पौधो को निकालकर नष्ट कर दें तथा कार्बडाजिन 1 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- मध्यम एवं निचले पर्वतीय क्षेत्रों में आडू के पर्णकुंचन रोग की रोक–थाम के लिए कीटनाशक रसायनों का द्वितीय छिड़कारें।
- नर्सरी में ग्राफ्टिंग किये गये पौधों में मूल वृंत से निकलने वाली शाखाओं को तोड़कर अलग करें।
- फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0 /10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
- आडू, प्लम, खुमानी आदि गुठलीदार फलों में फल अच्छादन हो गया है तो पेड़ों को ओलो से बचाने के लिए जहाँ तक संभव हो ओला अवरोधी जालियों का प्रयोग करें।
- ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में एप्पल स्कैब रोग के नियंत्रण के लिए आवश्यक छिड़काव करें।
- असिंचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा का थालों में प्रयोग कर नमी संक्षरण हेतु पलवार का प्रयोग करें।

पशुपालनप्रबन्धः

- इस माह तापमान अधिक होने के कारण, पशुओं में निर्जलीकरण, शरीर में लवण व भूख में कमी तथा उत्पादन आदि में गिरावट की समस्या हो जाती है। इसलिए पशुओं को उच्च तापमान से बचाने के लिए उचित उपाय करें।
- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग

काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।

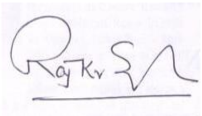

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर